भूमिका:

भारत में शासन सत्ता लोकतान्त्रिक प्रक्रिया है इसलिए यहाँ सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ है और सत्ता के विकेंद्रीकरण के कारण ग्राम पंचायत या ग्राम स्वराज की अवधारणा परिपुष्ट है । ग्राम स्वराज्य के अंर्तगत स्वयं ग्रामीणों का शासन होता है। गाँव को लेकर महात्मा गांधी कहते है कि "भारत की आत्मा गांवों में बसी है, अगर गाँव नष्ट हो जायेगा तो हिंदुस्तान भी नष्ट हो जायेगा। " गाँधी जी कहते है,अगर भारत का विकास करना है तो पहले गांवों का विकास करना होगा । गाँव के संदर्भ में बिनोवा जी कहते है कि हमारे भारत की संस्कृति,हमारा मूल स्वाभाव गांवों में ही देखने को मिलता है । हमारी सभ्यता गांवों में है। हमारे यहां की समाज रचना गांवीं के आधार पर ही हुई है और इसी संस्कृति पर हमारा देश खड़ा है।

पंचायत राज हमारी लोकतान्त्रिक पद्धति की अंतिम इकाई है ,जो गांवों के शासन सता की एक व्यवस्था है पंचायत राज के संदर्भ में गाँधी जी कहते है कि हर एक ग्राम में एक पंचायत होगी । वह स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होगी । पंचायत राज की अवधारणा भारत में अति प्राचीन समय से बनी हुई है। इसके अंतर्गत सभी ग्राम वासी अपने विकास एवं मुलभुत आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर रहेंगे । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में राज्यों को पंचायतों के गठन का निर्देश दिया गया है। 73 वां संविधान संशोधन के दौरान पंचायत राज को एक त्रिस्तरीय ढांचे, हर पांच साल में पंचायतों का नियमित चुनाव, अनुसूचितजाति/जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण ,स्वशासन की संस्था के रूप में काम करने के लिए शक्तियां एवं अधिकार,राज्यों का पुनर्गठन इत्यादि रूप में स्वीकार कियां गया।

पंचायत विकास के संदर्भ में हिवरे बाज़ार आज एक आदर्श ग्राम के रूप में प्रतिस्थापित हुआ है। हिवरे बाज़ार में आज वह सब साधन उपलब्ध है जो एक आदर्श ग्राम के लिए होनी चाहिए। जिस प्रकार के आदर्श गाँव की कल्पना महत्मा गाँधी ने की थी। आदर्श ग्राम हिवरे बाज़ार में ,ग्राम संसद,ग्राम सभा ,ग्राम संवाद ,इत्यादि लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के द्वारा ही शासन किया जाता है। हिवरे बाज़ार स्वयं आत्मनिर्भर और स्वावलंबी है । आज लगभग सभी पंचायत या गांवों की स्थिति ठीक नहीं है वहीँ यह हिवरेबाजार गाँव खुशहाल ,सम्पन्न और समृद्धशाली है । हिवरे बाज़ार में आदर्श ग्राम स्वरुप बच्चों के लिए प्राथमिक और माध्यमिक पाठशाला व्यामशाला,जल संरक्षण की उचित व्यवस्था, गांवों में साफ-सफाई के लिए जगह-जगह कूड़ेदान की व्यवस्था, घर-घर शौचालय की व्यवस्था,ग्रामीण समस्या के समाधान लिए एक ग्राम संवाद, गाँव के विकास लिए भावी

योजनाओं पर विचार विमर्श के लिए ग्राम संसद इत्यादि की संपूर्ण व्यवस्था है। वहां के लोगों ने स्वयं के ग्राम के नवयुवको के लिए रोजगार परख उद्योगों की व्यवस्था की है ,जिससे उस ग्राम में रोजगार के अवसर भी उपलब्ध है। वहा विभिन्न जाति ,धर्म के लोग भी रहते है किन्तु उनके भी अधिकार,और उनके विचारों का उतना ही सम्मान किया जाता है जितना बहुसंख्यक समुदाय का किया जाता है।

हिवरे बाज़ार आदर्श ग्राम के रूप में,वहा के निवासियों के स्वयं के प्रयासों से हुआ है। वहा सरकार की नीतियां भी बाकी सभी ग्राम पंचायतों के तरह ही लागु होती रही ,किन्तु उस गाँव के लोग थोडा और जागरूक हुए और अपने परिश्रम के द्वारा ,अपनी बिद्धिमत्ता के द्वारा ,आपसी प्रेम के द्वारा ,परस्पर सहयोग के द्वारा उन्होंने अपने गाँव को एक आदर्श ग्राम के रूप में खड़ा किया है।

गाँधी जी के आदर्श कल्पनीय गाँव के स्वरुप ही हिवरे बाज़ार को आज भारत के लगभग सभी बड़े-बड़े पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। भारत के अन्य गांवों को इस ग्राम से आदर्श होने लिए एक सबक लेना चाहिए और खुद को आदर्श बनाने की कोशिश की जानी चाहिए।